23 / 05 / 74 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

हद के आकर्षणों व विभूतियों से परे रह सच्चा वैष्णव होने का अनुभव

➢➢ अमृतवेले के रूहानी समय में मैं रूहानी आत्मा बैठ प्यारे रूहानी शिव बाबा का आह्वान करती हूँ...

➳ _ ➳ प्यारे बाबा वरदानों से मुझे भरपूर करते हुए इस आवाज की दुनिया से परे ले जाते हैं...

→ सूक्ष्म वतन में बापदादा अपनी दृष्टि से मुझे निहाल कर रहे हैं...

→ मुझ फ़रिश्ते का ज्ञान, गुण, शक्तियों से श्रृंगार कर रहे हैं...

- मैं फ़रिश्ता बहुत ही हल्कापन का अनुभव कर रही हैं...

➳ _ ➳ फिर फ़रिश्ते ड्रेस को छोड़ मैं आत्मा बिंदु बन बिंदु बाप के साथ शांतिधाम पहुँच जाती हूँ...

→ चारों और सम्पूर्ण शांति, कोई आवाज नहीं, हलचल नहीं...

→ शांतिधाम की शांति को स्वयं में समा रही हूँ...

→ शांति के सागर से निकली शांति की किरणों से मास्टर शांति का सागर बन रही हूँ...

→ मैं बिंदु और बाबा बिंदु बस और कोई नहीं...

→ धीरे-धीरे मैं बिंदु बाबा बिंदु में समा जाती हूँ... बाबा के साथ कंबाइंड हो जाती हूँ...

- अब मैं भी नहीं सिर्फ एक बाबा...
- एक होकर एकरस अवस्था में खो जाती हूँ...
- मैं आत्मा बीजरूप स्थिति का अनुभव कर रही हूँ...

➳ _ ➳ फिर मैं आत्मा धीरे-धीरे इस आवाज की दुनिया में आती हूँ...

→ इस शरीर में भृकुटी के सिंहासन पर विराजमान हो जाती हूँ...

➳ _ ➳ मैं आत्मा देख रही हूँ, चारों और अशांति, हलचल का वातावरण है...

→ पांच विकारों की अधीनता में डूबी हुई दुनिया... प्रकृति के पाँचों तत्व भी तमोप्रधान हो गए हैं...

- माया के आकर्षण से भरपूर वातावरण

➳ _ ➳ मैं आत्मा हर सेकंड स्वयं पर अटेंशन रख चेकिंग करती हूँ...

→ हर परिस्थिति, अशांति के वातावरण, वायुमण्डल या प्रकृति के तूफानों में भी क्या मैं आत्मा अचल-अडोल, शांत रहती हूँ...?

- बाहर के हर तूफ़ान में भी मैं आत्मा अन्दर से शांत रहकर कारण को निवारण में परिवर्तित करने का अभ्यास करती हूँ...

➳ _ ➳ कर्मक्षेत्र में या सम्बन्ध सम्पर्क में आते हुए मैं आत्मा स्वयं को स्वमानों की याद दिलाती हूँ...

→ मैं बाप समान हूँ...

→ मैं महावीर आत्मा हूँ...

→ मैं शांत स्वरुप आत्मा हूँ...

■ किसी भी अशांति या हलचल के वातावरण में भी अब मैं आत्मा शांत, अचल-अडोल रहती हूँ...

■ समय प्रमाण ज्ञान स्वरुप आत्मा बन अपने गुण, शक्तियों का दान कर चारों और के वातावरण को शांतिमय बना रही हूँ...

➳ _ ➳ सर्व हद के आकर्षणों और विभूतियों से परे रहने वाली सदा अपने ऊँचे स्टेज में स्थित रहती हूँ...

→ मैं आत्मा स्वयं को सदा याद दिलाती हूँ... ये मायावी आकर्षण अल्पकाल के हैं... विनाशी हैं...

→ साधनों के आकर्षण में पड़ मुझे माया का मणका नहीं बनना है, मुझे तो विजयमाला का मणका बनना है...

➳ _ ➳ पांच तत्वों, पांच विकारों के आकर्षण से मुक्त रहने वाली विजयी आत्मा हूँ...

→ अल्पकाल के सुख के लिए इन विकारों के वश होकर पाप कर बाप से दूर नहीं होना है...

→ मुझ आत्मा को तो सत्य बाप से सच्चा होकर रहना है, धर्मराजपुरी में नहीं जाना है...

■ मैं एक बाप के संग में रहने वाली एकरस स्थिति का अनुभव करने वाली बाप की प्यारी आत्मा हूँ...

➳ _ ➳ मैं आत्मा एक सेकंड में सहज ही वाणी से परे होकर वानप्रस्थ अवस्था में स्थित रहने वाली सच्चा वैष्णव हूँ...

→ कोई भी व्यक्ति, वस्तु, वैभव मुझ आत्मा को छू भी नहीं सकते हैं... अपने आकर्षण में मुझे बांध नहीं सकते...

→ किसी के भी स्वभाव, संस्कार मुझे प्रभावित नहीं कर सकते...

→ अब मैं आत्मा एक सेकंड में इन पांच तत्वों और हद के आकर्षणों से ऊपर उड़ जाती हूँ...

→ सदा अपने को ऊँचे पावरफुल स्टेज पर अनुभव कर रही हूँ... नीचे का कोई भी आकर्षण अब मुझे नीचे नहीं खींच सकता...